

भानग्राम

आराजी के पास ही भानग्राम है, वहाँ के मुख्य-मुख्य लोग श्रीस्वामीजी के बड़े भक्त थे । इसलिये साधारण जनों पर भी बहुत असर था । कितनों का जीवन सुधर गया । श्रीस्वामीजी ने वहाँ के मुखिया के घर में ब्रज-युगलसरकार को विराजमान किया था । सारा घर ही युगलसरकार पर फिदा है, उनके श्रीचरण-कमलों का प्रेमी है । सब मिलकर प्रेम से नामध्वनि करते, नाचते गाते नियम से लीला-कथा, सत्संग करते । रात को नौ बजे से तीन बजे तक सब इकट्ठे होकर परस्पर विरह-वार्ता करके जी भरकर रोते । उस सत्संग रस का आस्वादन करने के लिये आस पास के गाँवों के और पास-पड़ोस के रसिक भक्त भी आ जुड़ते । श्रीभक्तकोकिलजी स्वयं निज मुख से भान के सत्संग का बखान करते थे । वहाँ के लोग बाजे-गाजे से श्रीस्वामीजी का बड़ा सत्कार करते । परन्तु यह बात उनके नम्र स्वभाव के विपरीत पड़ती थी । वे किसी-न-किसी प्रकार उन्हें टाल देते । यहाँ तक कि स्टेशन से कुटिया पर पैदल ही चले जाते । भान के मुखिया के घर सन्त क्या आये, भगवन्त ही आ गये ।

‘आज मेरे भाग जागे प्यारे सन्त आये पाहुने’ की संगीत ध्वनि से भान गाँव गूँज उठा । घर का कोना-कोना आनन्दमन्दाकिनी की तरल-तरल तरंगों से धवलित हो उठा । नन्हें-नन्हें बच्चे नाच-नाचकर आगत स्वागत के गीत गाने लगे और ‘मिठले बाबल साईं की सदाई जय हो’ के नारों से

आकाश मुखरित हो गया । घर की और पास-पड़ोस की स्त्रियों ने श्रीगुरुग्रन्थ साहिब से आशीर्वाद के गीत चुन-चुनकर रंग-बिरंगे अक्षरों में काढ़कर रेशमी रुमालों को श्रीस्वामीजी की सेवा में रखा । आशीर्वाद के गीत देखकर 'आशीष प्रिय साई' बहुत खुश हुए । रुमालों को इकट्ठा करके, चादर बनवाकर ओढ़ ली ।

हमारे प्यारे साई अपने भक्तों से आशीष के सिवाय और कोई वस्तु ग्रहण नहीं करते थे । श्रीगुरुसाहिब के आशीर्वाद पदों से युक्त होने के कारण ही इन रुमालों को ग्रहण किया ।